रघुनाथ चौबे

बरेजा, सारण (बिहार)

जन्म-तिथि : २-१-१९३४

पेशा : अध्यापकी

"संगीतज्ञ आ संस्कृतज्ञ पिता स्वर्गीय श्यामदत्त चौबे राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेले रहीं आ राष्ट्रीय गीत बना के गावत रहीं। उहें के संस्कार रघुनाथ चौबे में गीत आ कविता का रूप में परगट भइल।"

" सनेहिया (एगो चिट्टी) "

जाके परदेस पिया नींदवा से सुति गइल,
बिरहिन के सुधिया भुलइल सनेहिया।

लिखत लिखत पाती, पागल भइल मतिया ले,
करइत के कान तहार भइल सनेहिया।

खरचा के काढ़ि तुहुँ फरका बइठ गइल,
सिरवा पर ठोना छोड़ि गइल सनेहिया।

सूनि ठोना जीव जरे, नयना से नीर झरे,
नीरवा से भींजेला अँचरवा सनेहिया।

हाथ छूछे, फाँड़ छूछे, केहू नाहीं बात पूछे
बनला के सभे बा इयार हो सनेहिया।

लड़का उपास रोवे, जीव अईठाला छोहे,
लड़कन के बाया छछनवल सनेहिया।

पीसी कुटी लाई ओमें लड़का बझाई हम,
अपने रहीले निरजले हो सनेहिया।

दूधवा के पूतवा जे बिलटेला रातो दिन,
दूधवो के सोतवा ना फूटे हो सनेहिया।

चचरा पर अँचरा बिछाई के सुताईं हम
पंजरा तोपे के ना बा चदरा सनेहिया।

लुगरी जे फाटि - फाटि चेंथरी झूलत बाटे,
लाजे नाहीं घरवा से निकलीं सनेहिया।

गोतिया देयाद लखि आभी- गाभी मार तारे;
मुदई के मनसा पूजवल सनेहिया।

बबुनी सेयान भइल, तनि ना फिकिर बाटे;
होई गइली गँउआँ के भार हो सनेहिया।

गोदी में बालक लेई रोएले हरिनिया से,
केकरा दुआरी हम लागीं हो सनेहिया।

बबुआ बेमार वाटे, पइसा ना पास बाटे,
कइसे के करीं उपचार हो सनेहिया।

डाक्टर हकीम वैद्य केहू नाहीं बात सुने,
पइसा के सभे बाटे भूखल सनेहिया।

पथ के ना जुरे चाउर, दोसर का कहीं आउर,
अइसन दिनवा देखवल सनेहिया।

गहना से बरतन ले बँधिकी में धव गइल,
कफनो के कुछओ ना रखल सनेहिया।

एही रे लइकवन के मुह देखि जियतानी,
ना त विष खाई प्रान तेजितीं सनेहिया।

कवना कलमिया से लिखले करम ब्रम्हा,
भिखइन के दसावा बनवल सनेहिया।

पीउन जे आवे गाँवे लइका जे देखि धावे,
आसावा के नइया डूबवल, सनेहिया।

कहवाँ ले लिखीं हम आपन हलतिया से,
थोरको लिखल ढेर बुझिह सनेहिया।

----------*******----------